गजाधर बाबू की वापसी पर किसी की आँख में आँसू नहीं। एक विषाद की छाया है जो क्रमशः गहरी होती जाती है। केवल दया नहीं, केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि एक जीवन के प्रति एक गहरा पीड़ा-बोध। इस रिटायर्ड आदमी का अकेलापन जैसे अपरिहार्य है-अकेलेपन से निकलना चाहते हुए भी वह फिर उसी अकेलेपन में वापस जाने के लिए लाचार हो जाता है। और क्या यह अकेलापन एक गजाधर बाबू का ही है ? क्या ऐसा नहीं लगता कि यह अकेलापन बहुत व्यापक है - ऐसा अकेलापन जो कहीं न कहीं आज सबके अंदर मौजूद है परन्तु जिसका सहयोगी कोई निकटतर से निकटतर व्यक्ति भी नहीं हो सकता ?

2. हिन्दी आलोचना के विकास में भारतेन्दु एवं भारतेन्दु मंडल के योगदान की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' पाठ के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना दृष्टि को स्पष्ट कीजिए।

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठों के आधार पर जयशंकर प्रसाद **अथवा** हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि पर प्रकाश डालिए। (15)

4. 'कहानी : अच्छी और नयी' पाठ के आधार पर नामवर सिहँ की आलोचना-दृष्टि स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

दूसरे सप्तक की भूमिका के आधार पर अज्ञेय के विचारों को रेखांकित कीजिए।

9/5/18 morning

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4244 **HC**

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **BA (H) HINDI - CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के सन्दर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए :- (10×3=30)

(क) कहते हैं कि कल्पना ही कवि का कार्य-क्षेत्र है, सत्य नहीं; सौंदर्य है, ज्ञान नहीं; हृदय है, मस्तिष्क नहीं; भाव है, विवेक नहीं। भावों की यह प्रधानता सिर्फ काव्य में ही नहीं मानी जाती, किंतु सभी ललित-कलाओं में भावों का प्राधान्य माना जाता है। भावों के आविष्करण को कला कहते हैं। पर आप किसी भी कला को लीजिए। उसमें विशेषत्व प्राप्त

करने के लिए एक विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है। जब तक उसका निर्दिष्ट ज्ञान नहीं होता तब तक उसमें सफलता प्राप्ति नहीं होती। ज्ञान के विकास से भावों का विकास होता है।

अथवा

हम जीवन में जो कुछ देखते हैं, या जो कुछ हम पर गुजरती है, वही अनुभव और वही चोटें कल्पना में पहुँचकर साहित्य सृजन की प्रेरणा करती हैं। कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊँचे दर्जे की होती है। जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें शक्ति और गति न पैदा हो, हमारा सौन्दर्य-प्रेम न जाग्रत हो - जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।

(ख) विकासवाद का सिद्धान्त आजकल प्राय: सर्वस्वीकृत सिद्धान्त है। इस सृष्टि-प्रक्रिया को इस दृष्टि से देखने वाले को यह बात अत्यन्त स्पष्ट हो जायेगी कि मनुष्य के रूप में ही सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी विकसित हुआ है। मनुष्य-देह में ही मन और बुद्धि का - भावावेग और तर्क-मुक्ति के आश्रय इन्द्रिय-विशेष का - विकास हुआ है। यह संसार क्या है और कैसा है इसके जानने का एकमात्र साधन मनुष्य की बुद्धि है। हम जो कुछ समझ रहे हैं और जो कुछ समझ सकते हैं, सब मनुष्य का समझा हुआ सत्य है। मनुष्य-निरपेक्ष सत्य बात-की-बात है। इस जगत में जो कुछ सत्य है वह मनुष्य-दृष्टि में देखा हुआ सत्य है, अतएव मानव-सत्य है।

अथवा

इसमें संदेह नहीं कि सच्चे कलाकार का लक्ष्य सौंदर्य की सृष्टि ही रहता है, अपने भावों और विचारों का प्रसार नहीं। किंतु सौंदर्य कोई निरपेक्ष वस्तु नहीं है। उसका निर्माण भी तो कलाकार की अपनी भावनाओं और धारणाओं के आधार पर ही होता है। वास्तव में भावनाओं और धारणाओं का प्रचार तो आत्माभिव्यक्ति का अत्यंत स्थूल रूप है। उसका सूक्ष्म और उत्कृष्ट रूप तो सौंदर्य की सृष्टि ही है। कला की सृष्टि शून्य में नहीं हो सकती। उसके लिए कुछ-न-कुछ आधार चाहिए जिसे कलाविद मूर्त उपकरण का नाम देते आए हैं। और ये मूर्त उपकरण है क्या ? कलाकार का अपना भावबोध ही कला का मूल उपकरण है।

(ग) तुलसी के राम उनकी आशाओं के केन्द्र ही नहीं हैं, मनुष्य में वह जिन तमाम नैतिक गुणों को प्यार करते थे, वह उनके प्रतीक भी थे। ब्रह्मरूप में भले ही वह निर्गुण निर्विकार हों, मानव-रूप में वह किसी देश-काल की सीमाओं में गतिशील समाज के मानव का ही प्रतिबिम्ब हो सकते हैं। तुलसी के राम भारतीय जनता के नैतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चरित्र में पितृभक्ति, भ्रातृप्रेम आदि पर बार-बार लिखा गया है लेकिन तुलसीदास का लक्ष्य परिवार में पिता के अधिकार की रक्षा करना न था। राम की मानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई, निषाद सभी के लिए है। विशेषता यह है कि जो जितना त्यागी है, निरूस्वार्थ है और दलित है, राम का प्रेम उसके लिए उतना ही अधिक है।

अथवा